



भद्रक-ओडिशा। 'व्यसन मुक्ति जागृति' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए महिला एवं बाल कल्याण मंत्री प्रफुल्ल समल। साथ है ए.डी.एम. श्यामभक्त मिश्रा, डिस्ट्रीक्ट सोशल सेक्योरिटी ऑफिसर पद्मन कुमार राय, सीनियर एडवोकेट निराकार जेना, नेशनल अवॉर्डेड टीचर पंडित दयानिधि दास, सरपंच अरविंद पाटी, ब.कु. मंजू तथा अन्य।



भीलवाड़ा-राज.। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण तथा मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित 'अमुखीकरण कार्यशाला' में डॉक्टर, जज, एडवोकेट्स, पुलिस कर्मी तथा विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए ब.कु. अनीता।



शिकोहाबाद-उ.प्र.। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर स्कूल, कॉलेज, एन.सी.सी. कैडेट्स एवं ब्रह्माकुमारीज द्वारा संयुक्त रूप से निकाली गई रैली में उपस्थित हैं डॉ. ए.के. आहूजा, ट्यूबरी एंड फाउण्डर, यंग स्कॉलर एकेडमी, डॉ. रजनी यादव, डायरेक्टर एंड प्रिन्सिपल, ज्ञानदीप स्कूल, ब.कु. पूनम तथा अन्य।



वरेली-उ.प्र.। 'व्यसन मुक्ति प्रदर्शनी' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए आर.टी.ओ. रिजनल इंस्पेक्टर उदयवीर सिंह, बैंक मैनेजर गोपाल जी, पूर्व न्यायाधीश शशि बाला जोहरी, ब.कु. नीता तथा अन्य।



रुड़की-उत्तराखण्ड। तम्बाकू निषेध दिवस के उपलक्ष्य पर नगर निगम परिसर में ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित दो दिवसीय 'नशा मुक्ति आध्यात्मिक प्रदर्शनी' में नशे के प्रति जागृति दिलाने के पश्चात् लोगों से नशा मुक्ति की प्रतिज्ञा करवाते हुए ब.कु. सोनिया। कार्यक्रम में सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. विमला ने सभी का मार्गदर्शन किया।



रोहतक-हरियाणा। 'नशा मुक्ति सेमिनार' के पश्चात् समूह चित्र में ब.कु. वंदना, ब.कु. रेनु, सिविल हॉस्पिटल की मनोरोग विशेषज्ञा डॉ. परवेश, जिम्नैस्टिक कोच सिंधु बाला, साइकिलिंग कोच शर्मिला जी, युवा संस्कृति संयोजक गुलाब सिंह तथा अन्य अतिथियों के साथ प्रतिभागी बच्चे।

“आज तक तो हमने सुना कि मुँह से बात होती है, अगर इस विषय में सोचा जाये तो मुँह की बातों की रील जैसी बहुत लम्बी दास्तान सामने आयेगी। पर यहाँ तो दिल से दिल की बात है। आपने भी सुना ही होगा, लेकिन कभी दिल से दिल की बात करके देखी है? दिल से दिल की बात करने के लिए कुछ तकनीकों को अपनाना होता है, और

दिल की बातें

वो तकनीक पूर्ण रूप से अपनाते पर ही काम करती है। इसमें किन्तु-परन्तु की बात दोनों



दिलों के बीच नहीं आती। तो एक तो होना चाहिए दिल साफ, दूसरा सच्चा दिल और सच्चाई के साथ स्वयं को माफ करना। ये मापदंड अपनाकर ही आप दिल से दिल की बात करने में कामयाब होंगे। यहाँ इस बारे में क्या ध्यान देने की बात है, उस केन्द्रबिन्दु पर हम आपको ले जाना चाहते हैं।

- ब.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

परमात्मा कहते हैं बच्चे, साफ दिल बनो अर्थात् दिल साफ होना चाहिए। दिल साफ को कहते हैं, नीयत साफ। आमतौर पर लोग कहते हैं कि अमुक की नीयत खराब है।

सबसे पहली बात तो ये है कि दिल साफ होना चाहिए। योगी और ज्ञानी का पहला लक्षण ही है कि दिल साफ हो। दिल साफ माना हमें किसी को रंज नहीं करना चाहिए। किसी के अवगुण हमें मन में नहीं रखने हैं। अगर हम किसी के अवगुण मन में रखते हैं तो हमारा दिल साफ नहीं रह सकता। अगर हमारे अन्दर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार भी है तो भी दिल साफ नहीं हो सकता। इसीलिए परमात्मा कहते हैं बच्चे, दिल साफ रखो तो मुराद हासिल। जो व्यक्ति छल, कपट, बनावट करता है उसका मन ठीक नहीं रहता, भटकता रहता है। उसका योग कभी ठीक नहीं लगता है और वह भगवान के नज़दीक भी जा नहीं सकता। जिसका मन जितना सरल होगा, साफ होगा, बाबा (परमात्मा) का वरदान हाथ भी उसी के सिर पर होगा। इसलिए सारे दिन में हमें चेकिंग करनी चाहिए कि आज मेरा दिल बिल्कुल साफ था? मैंने किसी के साथ छल, कपट तो नहीं किया? साफ दिल से ही हम परमात्मा के दिलतख्तानशीन बनेंगे।

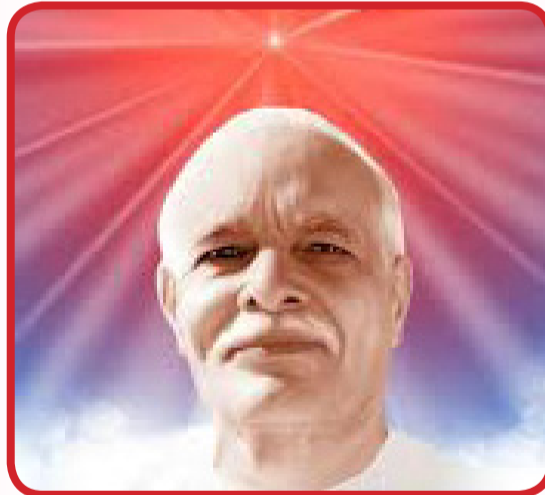
दूसरी बात है - सच्चा दिल। बाबा कहते हैं, सच्चे दिल पर साहिब राज़ी। साफ दिल और सच्चे दिल में अन्तर है। क्या अन्तर है? कई बार हम भगवान से भी छिपाते हैं। कोई गलत काम कर रहे होंगे, अन्तरात्मा की आवाज़ भी कह रही होगी कि यह गलत कर रहे हो, फिर भी हम समझते हैं कि बाबा देखते थोड़े ही हैं? परन्तु बाबा कहते हैं, मेरे पास भी टी.वी. सेट है। आप क्या करते हो, क्या सोचते हो, वो सब मुझे दिखायी पड़ता है। इस दुनियावी टी.वी. पर केवल एक्शन (अदायें) आती हैं, पर मेरे पास जो टी.वी. है, उस पर विचार भी आते हैं। कई दफ़ा हम ये भी सोच लेते हैं कि हम करेंगे तो हम ही पायेंगे कोई बात नहीं, जब समय आयेगा तब देखा जायेगा। अगर व्यक्ति यह भूल जाता है कि भगवान हमें देख रहा है अथवा हम जो भी करते हैं उसको दिखायी पड़ता है तो वह उल्टे काम करने लग जाता है। बाबा ने कहा है ना कि सच्चे दिल पर साहिब राज़ी। उमंग, उत्साह, राज़ी, खुशी जो जीवन के लिए ज़रूरी हैं, वो तब ही होंगे जब हमारा दिल सच्चा होगा। क्या उस सच्चे परमात्मा से भी हम सच्चे न रहें? अगर हमसे गलती हो जाती है, उसके

लिए हम बाबा, शिक्षक, सद्गुरु के सामने माफी मांग लेते हैं तो बाबा हमें क्षमा कर देंगे। जैसे छोटे बच्चे अपने माँ-बाप के सामने कान पकड़ कर कहते हैं कि मेरे से गलती हो गयी, मुझे माफ़ करो, तो माँ-बाप खुशी-खुशी माफ़ कर देंगे और कहेंगे कि दुबारा ऐसी गलती नहीं करना। इसी प्रकार, बाबा भी हमें माफ़ कर देता है।

तीसरी बात है - रहम दिल बनना। बाबा कहते हैं, आप बच्चों को हरेक पर रहम करना है। दुनिया वाले संसार में फँसे हुए हैं, अपने संस्कारों में फँसे हुए हैं, बुरी आदतों में पड़े हुए हैं। उनको देख कभी-कभी आपको गुस्सा भी आ जाता होगा या नफ़रत भी पैदा हो जाती होगी। उनसे मुँह भी मोड़ लेते होंगे। बाबा हम बच्चों को समझाते हैं और कहते हैं बच्चे, यह पुरानी दुनिया है, हरेक अपने जन्म-जन्मान्तर के पुराने संस्कारों में फँसे हुए हैं। आप रहमदिल बाप के बच्चे हो। भगवान को सब क्या कहते हैं? “दुःखियों पर दया

रहा, तो उसका फल उसे क्या मिलेगा? उनके अन्दर ना तो शान्ति है और ना ही आत्मिक बल। इन्सान में इन्सानियत नहीं है। इसका कारण क्या है? एक तरफ तो हम अच्छा कार्य करते हैं, पर उसके साथ पुराने विकर्म के ख़ाते को समाप्त नहीं करते और आगे के लिए श्रेष्ठ कर्म नहीं करते। इसलिए आज वो विद्या चाहिए कि जिससे जीवन परिवर्तन हो, श्रेष्ठ बने।

बाबा कहते हैं, पहले अपने आप पर रहम करो। लोग यह नहीं समझते कि हमें स्वयं पर रहम करना है। वे समझते हैं कि रहम नामक कोई चीज़ है जोकि किसी के सामने हाथ फैलाने पर, वह जेब से निकाल कर दे देगा या चेक लिखकर दे देगा। ऐसे तो रहम मिलता नहीं है। जब तक स्वयं पर रहम नहीं करेंगे, स्वयं को विकारों से छुड़ाने का प्रयास नहीं करेंगे तो कैसे हम रहम के पात्र बनेंगे? आप थोड़े को पानी दिखा सकते हैं, लेकिन उसके मुँह में पानी तो डालकर नहीं पिलायेंगे। पीना तो उसको खुद को पड़ेगा। चलो, कभी थोड़ा बीमार पड़ा तो उसको ऐसे भी पिलायेंगे। लेकिन रोज़-रोज़ तो उसको ही पीना पड़ेगा। जब तक हमारे मन में यह संकल्प नहीं आयेगा कि मुझे बुराइयों को छोड़ना है, मुझे अच्छा बनना है, मुझे बाबा की आश पूरी करनी है, तब तक भगवान भी रहम नहीं करेगा। इस रीति से स्वयं को परिवर्तन करने का दृढ़ संकल्प करना ही स्वयं पर रहम करना है।



इस प्रकार, आप भी अपने ऊपर रहम करो और दूसरों पर भी रहम करो, माना धर्मराज की सज़ा से स्वयं को और दूसरों को बचाओ। और हाँ, रहम का अर्थ यह भी नहीं है कि कोई ने गुस्सा किया, उसकी गुस्सा करने की आदत छूटी ही नहीं, और बढ़ती गयी तो क्या फायदा? हमारे रहम ने और ही उसके विकर्म बढ़ाने के लिए अवसर दिया। यह रहम नहीं हुआ। रहम करने का अर्थ है कि जिस व्यक्ति ने आपके साथ गलत व्यवहार किया हो, उसको अपनी रूहानी शक्ति से परिवर्तन करना और आगे उससे घृणा, द्वेष आदि नहीं करना। बाबा कहते हैं, रहम भी पात्रों पर करो। रहम भी उस व्यक्ति पर करो जो उसके लायक है। अपात्रों पर किये गये रहम से अपने ही पाप की मात्रा बढ़ती जाती है। क्योंकि आपके रहम से वह और पाप, विकर्म, गंदे कर्म करता रहेगा। उसके उस कर्म के लिए जिम्मेवार होने के कारण आपको भी उसके पाप कर्मों में हिस्सा मिलता है।

करो, आप दयालु हो, कृपालु हो, रहम दिल हो, आप कृपा के सागर हो, दया के भंडार हो, हम पर दया करो, कृपा करो।” जब आप मास्टर रहमदिल बनोगे तब घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, नफ़रत सब खत्म हो जायेंगे। उनको तो पता ही नहीं है कि रहम अथवा कृपा कहते किसको हैं? और कैसे मिलती है? रहम करने वाला तो एक परमात्मा ही है। वो ही आकर हमें दुःखों से छुड़ाते हैं, हम पर रहम करते हैं। रहम करने का अर्थ है, जन्म-जन्मान्तर के जो विकर्म हैं, हिसाब-किताब हैं, कर्मबन्धन का खाता है, उनसे छुड़ाना, मुक्त कराना। जब तक हम उनसे मुक्त नहीं होंगे तो हम कैसे दूसरों पर रहम कर सकेंगे? समझ लीजिये, कोई ने हॉस्पिटल खोला, धर्मशाला बनवायी अथवा स्कूल-कॉलेज खोले, अनेकों को पढ़ने का मौका दिया। लेकिन इतना कार्य करने के बावजूद भी वह महादानी, विकर्म करता रहा, पाप करता